राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिंदी काव्य के निर्माता थे | राष्ट्रीय-सांस्कृतिक नवजागरण ने हमारी संस्कृति, इतिहास और साहित्य में विश्वास का जो स्वर उत्पन्न किया था, उसकी अधिकाधिक स्पष्ट अभिव्यक्ति, सबसे पहले मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में ही हुई | उनका जन्म 3 अगस्त, 1886 को चिरगांव, झांसी, उत्तर प्रदेश में एक संभ्रान्त वैश्य कुल के कनकने परिवार में हुआ था |

आरंभिक शिक्षा झांसी के राजकीय विद्यालय में हुई | किन्तु उसमें कवि का मन नहीं रमा और अन्ततः घर पर ही उन्होंने संस्कृत-हिंदी तथा बांग्ला का व्यापक स्वाध्याय किया | एक बार मैथिलीशरण ने कहा था, “मैं क्यों पढ़ाई करूंगा ? पढ़ने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं | लोग-बाग मुझे पढ़ेंगे | ” बचपन में कही उनकी यह बात आगे चलकर सही साबित हुई |

मुंशी अजमेरी जी ने उनका मार्गदर्शन किया और उन्होंने 12 वर्ष की अवस्था में ब्रजभाषा में कविता रचना आरंभ की | महादेवी वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी तथा अज्ञेयजी ने मुक्त मन से स्वीकार किया कि उन्होंने खड़ी बोली काव्य के संस्कार मैथिलीशरण गुप्त से ही लिए और वे उन्हें अपना काव्य गुरु मानते थे|

उनकी प्रमुख रचनाएं हैं -

मौलिक काव्य रचनाएं	रंग में भंग, जयद्रथ वध, पद्य प्रबंध, भारत-भारती, शकुन्तला, किसान, पत्रावली, वैतालिक, पंचवटी, स्वदेश संगीत, हिंदु, त्रिपथगा, शक्ति |
गीतिनाट्य	तिलोत्तमा, चन्द्रहास, अनघ, गृहस्थ-गीता |
संस्मरण	मुंशी अजमेरी |
श्रद्धांजलि संस्मरण	शब्द चित्र |
अनुदित कृतियां	स्वप्नवासवदत्ता, विरहिणी बृजांगना, पलासी का युद्ध, गीतामृत, वीरांगना |
संस्मरण एवं आत्मकथा	गणेशाजी, आचार्यदेव, अनुज, श्रद्धांजलि, हमारा वृन्दावन |
निबंध एवं समालोचना	हिंदी कविता किस ढंग की हो, बृजनन्द सहाय के उपन्यास |

12 दिसम्बर, 1964 को हृदयगति रुक जाने के कारण 78 वर्ष की आयु में चिरगांव में ही उनका देहावसान हो गया |